

वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern ThinkingMonthly
MagazineIssue
89Year
10Volume
3Dec. 2019
ChandigarhPage
24मासिक पत्रिका
Subscription Cost
Annual - Rs. 150

fopkj

यम लोक में बैठा चित्रगुप्त कौन है ?



चित्रगुप्त मन्दिर खुजराओ

हम में बहुत से ने यह पढ़ा और सुना है कि यम लोक में चित्रगुप्त रहता है वह जितने भी प्राणी हैं उनके अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब एक बही खाते में रखता है? जब किसी भी प्राणी की मृत्यु हो जाती है तो उसकी आत्मा यम लोक में जाती है, चित्रगुप्त उस का वही खाता पढ़ कर सुनाता है और उसके अगले जीवन का निर्णय उसी वही खाते के आधार पर लिया जाता है और उसके अनुसार ही प्राणी को इस लोक में फिर से भेज दिया जाता है।

मेरे लिये तो जो कि आर्य समाजी विचारधारा से है यह एक मनघड़ंत बात है। कौन अरबों खरबों लोगों का हिसाब एक वही खाते में रख सकता है। यद्यपि यह एक पौराणिक बात है और मेरा मानना है कि हर एक पौराणिक बात या कहानी मनघड़ंत तो होती है परन्तु उस कि तह पर कुछ भाव भी छिपा होता है जो कि विचारशील व्यक्ति ही ढूंढ सकता है। आम व्यक्ति कहानी का आनंद उठाता है और विचारशील व्यक्ति उस के भाव को देखता है। यहां भी अवश्य एक भाव है, यह अवश्य

Contact:**BHARTENDU SOOD****Editor, Publisher & Printer****# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047****Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,****E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021

नहीं जो मैंने अपनी योग्यता से ढूँढा वह ठीक ही हो आप अपनी तह पर सोचने में स्वतन्त्र है और यदि मत भेद हो तो लिखें।

हम सब के पास दस इन्द्रियों हैं जिन में पांच कर्मेन्द्रिय हैं और पांच ज्ञानेन्द्रिय हैं। इन्हीं दस इन्द्रियों द्वारा जो कुछ भी हम बाहरी संसार और वातावरण में देखते हैं उन को छान कर ग्रहण करते हैं। इस छलनी का काम करते हैं ———हमारा मन और विवेक इन दोनों में विवेक का मुख्य काम होता है और नीचे की सतह पर मन काम करता है। इसके बाद चित है जहां जो भी हम ने किया होता है या देखा होता है उस का चित्र छप जाता है। या यूँ कहे कि चित हमारे द्वारा किये कार्यों की एक याददाष्ट को स्टोर कर रखने वाली फलोपी है तो गलत नहीं होगा। यही कारण है कि दो मनुष्य एक ही अनुभव के बाद जो कुछ भी ग्रहण करते हैं वह एक जैसा नहीं होता यह इन दस इन्द्रियों और उनके विवेक के मन पर ही निर्भर करता है। उदाहरण के लिये जब गणेश की मूर्ती द्वारा दूध पीने की बात फैली तो कुछ ने स्वीकार किया कुछ ने नहीं, फर्क था दस इन्द्रियों और विवेक के कार्य का। कुछ ने कहा यह असम्भव है बहुतों ने कहा यह सत्य है।

जो हमारे चित में होता है वह दूसरों को पता नहीं होता यहां तक कि पति के चित का पत्नी को और पत्नी के चित का पति को पता नहीं होता जब तक कि वे दोनों एक दूसरों को ईमानदारी से न बताये। एक बात स्पष्ट हो गई कि सब अनुभवों कि चित में चित्र बनता है जो कि गुप्त रहता है। इसी से चित्रगुप्त बना है। चित्रगुप्त कोई मुनीम नहीं परन्तु आप के चित में आप द्वारा किये गये कामों के चित्र ही है जो कि आप तक ही सीमित रहते हैं यानी कि गुप्त रहते हैं। इसीलिये चित्रगुप्त कहा गया है।

मृत्यु क्या है? मेरे अनुसार इस शरीर को चलाने वाले साधनों की कार्य क्षमता खत्म हो जाना। उदाहरण के लिये वायु, जल व खाद्यान्न सभी भरपूर हैं परन्तु जो शरीर को चलाने वाले साधन हैं उनकी क्षमता खत्म है। दो तरह मृत्यु होती है, एक प्राकृतिक ढंग से दूसरा अप्राकृतिक ढंग से जैसे किसी दुर्घटना का शिकार हो जाना। जब मनुष्य प्राकृतिक ढंग से मरता है तो आहिस्ता आहिस्ता उसे अपनी मृत्यु का ऐहसास होने लगता है। इस दौरान ऐसी स्थिति आती है कि उस के चित पर अंकित चित्र उसके सामने घूमने लगते हैं, यह वह समय होता है कि उसके पाप और पुण्य दोनों उसके सामने धूमते हैं। यदि पाप किये हों तो पश्चाताप भी होता है, उदाहरण के लिये यदि उसने कोई कत्ल किया हो, चाहे कि अदालत से वह बरी हो गया हो परन्तु वह बात व उसका पश्चाताप उसके चित पर अंकित होता है व यही चित्रगुप्त उसके अगले जीवन का निर्णय उसको बता देता है। यही बात उसके अच्छे कर्मों की है वह उसे आनन्द की अनुभूति करवाते हैं और यही आनन्द उसके अगले जीवन के बारे में निर्णायक होता है।

एक व्यक्ति वे किसी महात्मा से पूछा कि आप बहुत पहुंचे हुये हैं, क्या आप अपने पिछले और अगले जीवन के बारे में कुछ बता सकते हैं। महात्मा ने कहा मेरा पिछला जीवन अवश्य अच्छा होगा तभी तो यह मानव का चोला मिला और मेरे अनुसार अगला जीवन भी अच्छा ही होना क्योंकि मैं इस जीवन में भी पाप से दूर ही रहा हूँ। कहने का अर्थ यह है कि चित्रगुप्त कोई यमलोक में रहने वाला मुनीम नहीं बल्कि आपके अपने चित पर ही आपके द्वारा किये गये कर्मों का चित्रण है।

चित्रगुप्त मन्दिर खुजराओ

Some people die while they live, whereas others live even after they are dead

The type of rebirth, however, depends on our karmic account, which, in turn, depends on the quality of karmas, or actions, performed by us during the course of our lives.

That's how "some people die while they live, whereas others live even after they are dead". Says the Dalai Lama, **if we wish to die well, we must learn how to live well. Hoping for a peaceful death, we must cultivate peace in our mind and the way of our life.**



शिमला का कामधेनु जल

SHARDA

गैस ऐसिडिटी व पेट के विकारों के लिए
एक असरदार व अदभुत आयुर्वेदिक औषधि

एक बोतल कई महीनों चले । फोन : 0172-2662870, 9217970381

Marketing Office : H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 150 रुपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172-2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
- 2- vki pfd ; k dsk fuEu cfd es tek djok l drsgf %&
Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 IFC Code - CBIN0280414
Bhartendu sood, IDBI Bank - 0272104000055550 IFC Code - IBKL0000272
Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, IFC Code - PSIB0000242
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रुचिकर लगे।

; fn vki cfd es tek ugha djok l drs rks d'i ; k at par
dk pfd Hkst nA

The Man Who Rewrote Religion

Bhartendu Sood

Swami Dayanand Saraswati's concept of God was formless, reachable by meditation.

This incident is about 140 years old. In a town on the border of West Bengal and Bihar, a man was taking two buffaloes along, when another man, a sage, was struck by the sight of the colour-smeared cattle. He was stunned to hear the man say that he was taking those buffaloes to offer his deity and in return the deity would grant him a son.

The questioner asked, "Who advised you to do this?" "It is written in the Vedas and I was told this by my Guru who is a great Vedic scholar," replied the man. The questioner met this guru and wanted him to produce the Vedic text which sanctioned animal sacrifice. But the 'guru' couldn't even read, let alone understand the meaning of Sanskrit hymns.



This was the condition of our society when Swami Dayanand Saraswati after acquiring knowledge of the Vedas under the tutelage of Swami Virjanand, started his crusade against those, who in the name of religion were fooling the illiterate masses. He proved how scripture was being practiced diametrically opposed to the true interpretation of the Vedas. He trampled underfoot the orthodoxy that prohibited the study of the Vedas by women and Dalits and said all human beings had the right to study the Vedas, which transcended caste, faith and geography.

To him 'Arya' was not a caste but a man of superior principles and character and the Arya Samaj he founded was "the assembly of good people". His concept of God was formless, reachable by meditation.

Dayanand Saraswati was equally bold in his crusade to improve the condition of women, deplorable in India at that time. He placed before people that the Vedas sanctioned the most exalted status to women at home and in society and women had as much right to education and a place in the judiciary, legislative assemblies, and state's administration as men. He opposed child marriage and sati and upheld widow-remarriage and a woman's right to choose her partner. This was his birth anniversary month.

चण्डीगढ़ शहर में पिछले पांच सालों में ८१ ऐसे बच्चों ने आत्महत्या की जो २० साल से कम के थे

नीला सूद



एक रिपोर्ट के अनुसार चण्डीगढ़ शहर में पिछले पांच सालों में ८१ ऐसे बच्चों ने आत्महत्या की जो २० साल से कम के थे। पी जी आई के विद्वान डाक्टर का मत है



कि ऐसा बच्चे तब करते हैं जब दीर्घ ईच्छाओं के पूरा न होने के कारण व्यक्ति निराश हो जाता है या फिर जिस से प्यार करते हैं उस से सम्बन्ध खराब हो जाते हैं और एक धक्का सा लगता है, ऐसी हालत

में ऐसा लगने लगता है कि अब जीवन का कोई अर्थ नहीं रहा अब जीना बेकार है और आत्महत्या जैसा गलत कदम बच्चा ले लेता है। मेरा मानना है कि हम माता पिता बच्चों को ऐसी स्थिती से निपटने के सक्षम बना सकते हैं ताकि उनको आत्महत्या जैसा कदम न उठाना पड़े। उसके लिये हमें कुछ समय देना होगा। यह काम हम दूसरों पर नहीं छोड़ सकते। सरल उपाय है कि हम बच्चे का ईश्वर में विश्वास पैदा करें। ऐसा विश्वास जिस में बच्चा यह समझने लगे कि ईश्वर को ऐसा ही मजबूर था और इस में ही उस के लिये कुछ अच्छा था या उसकी भलाई छिपी है। उदाहरण के लिये बच्चा डाक्टर की एंनट्रेंस में सफल नहीं होता है तो उसका ईश्वर में विश्वास इस कदर अटल हो कि वह यह संदेश ले कि ईश्वर ने उसके लिये इस से भी अच्छा कोई और करियर रखा हुआ है।

परन्तु यह कहने मात्र से या पढ़ने मात्र से सम्भव नहीं। आप दो बार नहीं तो दिन में एक बार बच्चों के साथ बैठकर सन्ध्या, पूजा, पाठ अवश्य करें और ईश्वर पर कुछ चर्चा भी करें। चाहे आप कितने भी व्यस्त हैं, आधे घंटे चाहे लाख कमा लेते हैं तब भी आधे घंटे के लिये उसे छोड़ दें। क्योंकि सुख देने वाला बच्चा आपके लाखों करोड़ों रूप्यों से कहीं अधिक अच्छा होता है, यह बात वे अधिक जानते हैं जिन के पास पैसा तो है पर बच्चे उनकी नहीं मानते व मनमानी करते हैं। जो ईश्वर पर विश्वास को अपनी शक्ति बना लेता है----मिले भरोसा आपका हे मेरे जगदीश, उसका जीवन ऐसा हो जाता है कि जैसे उसे कोई उंगली पकड़ कर ठीक जगह पर ले जा रहा है, जो उसके लिये उचित है, और गलत जगह से बचा रहा है, जो उसके लिये उचित नहीं वहां से खींच कर वहां से ले आता है। यदि आपने बच्चे को इस योग्य बना दिया कि वह ईश्वर को ही सब कुछ मानने लगे तो आपने उसे सब कुछ दे दिया क्योंकि फिर आपको कुछ नहीं करना ईश्वर ही उस के लिये सब कुछ करता जायेगा। जीवन साथी भी चुन देगा, उपयुक्त नौकरी और व्यवसाय भी उसे मिल जायेगा बाकी सब तो इन से ही पैदा होते हैं। सब से बड़ी बात ऐसा बच्चा आपके लिये सुख का साधन होगा न कि दुख का। इस में कोई अतिशयोक्ति नहीं कुछ बच्चे माता पिता के लिये दुख का कारण भी बन जाते हैं परन्तु इस में बच्चे की गलती कम और माता पिता की अधिक होती है।

अपने मन को श्रेय मार्ग पर ही लगायें

भरतेन्दु सूद

सूर्य चन्द्र के स्वस्थी पथ पर हे प्रभु चलते रहें

दानी, ध्यानी, आहिंसक बन सत्संग सदा करते रहें ॥

यह संदेश ऋग वेद के मन्त्र में है जिसका भाव है कि हे ईश्वर ऐसी कृपा करें कि जैसे सूर्य और चन्द्रमा सारे संसार और प्राणीजगत का कल्याण अपनी किरणों द्वारा करने में लगे हुये हैं हम भी उसी तरह विना किसी भेद भाव के दूसरों के कल्याण में लगे रहें । यह परोपकार तभी संभव है जब हम दानी बने, आप का ध्यान करके आप के इश्वरीय गुणों को धारण करे, किसी पर किसी भी तरह की हिंसा न करें और इन साधनों द्वारा सत्संग में ही रहें ।

May we follow and traverse the path of benevolence like the Sun and the Moon and achieve this by remaining in a good company which is possible with charities, by communing with You and following nonviolent and peace generating methods.



एक बार किसी धनी के पास एक व्यक्ति ने नौकरी के लिये प्रार्थना की । धनी व्यक्ति ने उससे पूछा-- क्या वेतन लोगे? नौकरी के अभिलाषी ने कहा---मेरा वेतन यही है कि मुझे हर समय काम मिलता रहे । जब तुम मुझे काम नहीं दोगे, मैं तुम्हें मार डालूंगा । धनी ने सोचा--- “यह तो बहुत अच्छा सेवक है जो वेतन कुछ भी नहीं मांगता, किन्तु काम हर समय चाहता है और कभी आराम नहीं चाहता । मैंने अपने काम के लिये कई आदमी रखे हुये हैं । बहुत सारा वेतन देता हूं । क्यों न इसे ही रख कर बाकीयों को निकाल दिया जाये । इस प्रकार सोचकर धनी व्यक्ति ने उसे नौकरी पर रख लिया ।

नौकर काम करने में बहुत तेज था । इधर मुंह से काम का आदेश निकला नहीं कि कार्य पूरा हो जाता था । उस धनी का पूरे दिन का काम जो कि कई व्यक्ति करते थे एक घंटे में ही पूरा

हो जाता पर इस ने धनी कि चिन्ता बहुत बड़ा दी । ---अगर इसे काम न दिया तो यह मुझे मार डालेगा । काम दे तो कहां से रोज इतना काम लायें जो कि इसे पूरा दिन व्यस्त रखे । इस चिन्ता ने धनी को व्याकुल कर दिया । खान पान सब नीरस हो गया । एक दिन किसी बुद्धिमान व्यक्ति ने उस धनवान से पूछा---इतना धन सम्पत्ति होते हुये भी तुम इतने दुवले कमजोर क्यों होते जा रहे हो? धनी ने सारी कथा कह सुनाई । बुद्धिमान ने साचा और बोला---- तुम इसे केवल अपने ही कामों में क्यों सीमित रखते हो? इसे मोहल्ले नाले व गांव वालों का काम करने को भी दे दो । इस तरह यह व्यस्त रहेगा और तुम इस के हाथों बचे रहोगे ।

यही अवस्था मनुष्य के मन की है । जिस समय इसे शुभ कर्मों से अवकाश मिलेगा, उस समय मनुष्य का मन इधर उधर भागेगा और उस की सोच नाकारात्मक भी बन सकती है जिसके कारण वह नाशकारी कर्मों में लग सकता है । इस से बचने का सब से अच्छा उपाय है कि मनुष्य अपने आप को परोपकारी कार्यों में लगाये । जब की परोपकारी कार्यों का फल सदैव अच्छा ही होता है बुरे काम करने से दुख और विपत्तियां ही सामने आती है । प्राया मनुष्य के अपने काम बहुत नहीं होते उसे वह शीघ्र ही समाप्त कर लेता है और जब उसके पास काम नहीं होता तो उसका मन इधर उधर भागता है । इसलिये उस के लिये आवश्यक है कि ऐसे कार्यों को भी करे जो कल्याणकारी अर्थात् दूसरों को सुख देने वाले होते हैं ।

भगवान रामचन्द्र ने भी हनुमान को यही संदेश दिया था---हे हनुमान इच्छारूपी नदी के दो मार्ग हैं, एक भली इच्छा, दूसरा बुरी इच्छा । जो इच्छा इश्वर आदेश के अनुरूप है वह भली है, जो विरुद्ध है, वह बुरी है । अतः ईश्वर को सर्वत्र विद्यमान जानकर और इस विचार को सामने रखकर कि उसकी आज्ञा के विरुद्ध कार्य करने से दुख भोगना पड़ेगा, व्यक्ति को दूसरों की भलाई जिसे परोपकार कहा गया है, करने चाहिये । जो लोग परोपकार के कार्य करते हैं वे सदा खुश रहते हैं । जब तक प्राण हैं, व्यक्ति परोपकार के कार्यों में ही लगा रहे । खासकर इस बात को ध्यान में रखते हुये कि मनुष्य जीवन बहुत मूल्यवान है, मुश्किल से प्राप्त होता है और फिर से मनुष्य चोला तभी मिलेगा अगर हमारे कर्म अच्छे होंगे अर्थात् हम परोपकार के कामों में ही इस जीवन को लगाये रखेंगे । जो शुभ कर्म दूसरों की भलाई के लिये किये जाते हैं, वे कभी बन्धन का कारण नहीं बनेंगे अर्थात् मुक्ति और परम आनन्द के अधिकारी बनेंगे

PROPERTY FOR SALE

Ist Floor of a 1 Kanal Corner House in Sector-35 Chandigarh,
facing Park, 2BHK with Annnnexe, newly renovated, ready to move.
Contact—9878595377 email-madan.mohindra@outlook.com

if=dk ea fn; s x; s fopkjs ds fy, y[kd Lo; a ftEepkj gA y[kdks ds VyhOku u- fn, x, gS
ll; kf; d ekeyks ds fy, p.Mhx<+ds ll; k; y; eku; gA

Publisher & Printer Bhartendu Sood Printed at Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood Place of Publication # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

अंग्रेजों और मुसलमानों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द के विचार

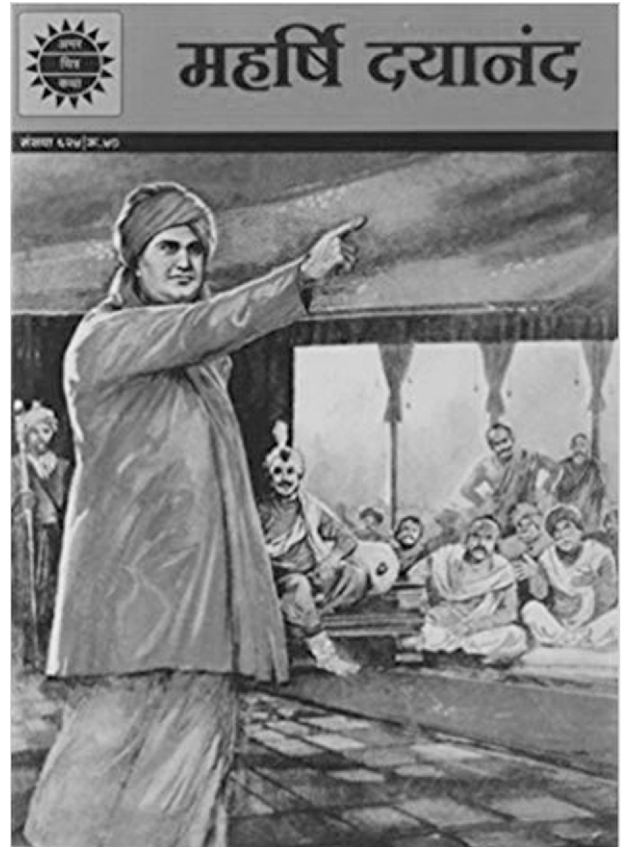


श्री कृष्ण चन्द्र गर्ग

महर्षि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन – द्वारा युधिष्ठिर मीमांसक – प्रथम भाग

10 अगस्त 1878 को महर्षि दयानन्द की तरफ से मौलवी मुहम्मद कासिम अली को यह विज्ञापन दिया गया था – कभी वह भी समय था जबकि मजहबी विषयों में बातचीत व शास्त्रार्थ होने पर लोगों के सिर कट जाते थे। और ऐसा भी समय था कि एक मत के अतिरिक्त दूसरे के मत के विषय में किसी प्रकार का प्रवचन करना या व्याख्यान देना मानों प्राणों को खो देना था। और ऐसे भी दिन थे कि जो राजा का मजहब होता था, उसके अनुयायी तो प्रत्येक प्रकार से स्वतन्त्र होते थे, परन्तु क्या साहस कि दूसरे मतवाला अपने सिद्धान्तों को प्रकट कर सके। लाख अपने मन में कोई सत्य को सत्य क्यों न जाने, परन्तु झूठ को झूठ कहने का अधिकार न रखता था। सारांश यह कि सत्य की खोज करने वाले और झूठ को झूठ सिद्ध करने वाले सुलेमान के कारागार में नहीं, तो उनके पीछे होने वाले राजाओं के कारागार में तो अवश्य डाले जाते थे। हजार-हजार धन्यवाद ईश्वर का है कि अब अंग्रेजी सरकार ने अपनी न्यायप्रियता से प्रजा को स्वतन्त्रता प्रदान की। जिस बात को मनुष्य अपने बुद्धि बल से प्रमाणित समझता था, उसको प्रकट करने का ढंग भी उत्पन्न हो गया। सत्य तो यही है कि न्यायकारियों और अन्वेषकों को तो मानो एक सम्पत्ति हाथ लगी है।

(पूर्ण संख्या 188)



23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लैवास्तिकी को पत्र में महर्षि दयानन्द लिखते हैं – मैं परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि जो हमने आपस के विरोध, फूट, अनाचार करने, और जैन और मुसलमान आदि की पीड़ा और भ्रम जाल से कुछ-कुछ अलग स्वास्थ्य और स्वतन्त्रता प्राप्त की है कि जिस से मैं वा अन्य सज्जन लोग अपना-अपना सत्य अभिप्राय युक्त पुस्तक रचने, उपदेश करने और धर्म में स्वाधीनपन से आनन्द में प्रवृत्त हो रहे हैं क्या जो श्रीयुत भारतेश्वरी महाराणी, पार्लियामेण्ट सभा और आर्यावर्त देशस्थ राज्याधिकारी धार्मिक विद्वान और सुशील न होते तो क्या मेरा व अन्य का मुख प्रफुल्लित होकर व्याख्यान, वेदमत प्रचारक पुस्तकों की व्याख्या करनी भी दुर्लभ न होती? और आज

तक शरीर भी बचना कठिन न था, इसीलिये पूर्वोक्त महात्माओं को हम लोग धन्यवाद देते हैं।
(पूर्ण संख्या 500)

महर्षि दयानन्द चरित – लेखक बाबू देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय,

प्रकाशक – विजयकुमार गोविंदराम हासानंद, दिल्ली, संस्करण 2001

स्वामीजी पटना में एक मास रहे और 3 अक्टूबर 1872 को बेगमपुर के स्टेशन से मुँगेर के लिए रेल पर सवार हो गये। रात्रि के बारह बजे जब गाड़ी जमालपुर जंक्शन पर पहुँची तो मुँगेर की गाड़ी के छूटने में एक घण्टे की देर थी। स्वामीजी कौपीनमात्र धारण किये प्लेटफार्म पर टहलने लगे। एक अंग्रेज इन्जीनियर और उसकी पत्नी प्लेटफार्म पर खड़े थे। मेम साहब को एक नंगे साधु को टहलते हुए देखकर बुरा लगा। उसके पति ने स्टेशन मास्टर को स्वामीजी के पास भेजा कि इस साधु को टहलने से रोक दो। वह तो जानता था कि साधु कौन है। वह डरता-डरता गया और उसने कहा कि महाराज ! आप कुर्सी पर आराम कीजिए, अभी गाड़ी छूटने में देर है। स्वामीजी समझ गये कि उसे गोरे साहब ने भेजा है कि हमें टहलने से रोक दे। उन्होंने स्टेशन मास्टर से कहा कि साहब से कह दो कि हम उस युग के लोग हैं जब बाबा आदम और बीबी हव्वा अदन के उद्यान में नंगे रहने में तनिक भी लज्जा नहीं करते थे। स्वामीजी ने टहलना जारी रखा। स्टेशन मास्टर ने साहब से जाकर कहा कि हुजूर वह कोई भिखमँगा तो है नहीं जिसे प्लेटफार्म से निकाल दूँ। वह एक स्वतन्त्र संन्यासी है जो मुझे और आपको कुछ भी नहीं समझता। नाम पूछने पर स्टेशन मास्टर ने महाराज का नाम बताया तो साहब ने कहा कि क्या प्रसिद्ध सुधारक दयानन्द यही है। इसके पश्चात् वह स्वामीजी के पास गया और जब तक गाड़ी छूटने का समय हुआ तब तक उनसे बात-चीत करता रहा।

(पृष्ठ 214)

सन 1872 में भागलपुर में एक दिन एक सुशिक्षित मौलवी स्वामीजी से धर्मसम्बन्धी वाद-प्रतिवाद करने के लिए आया। स्वामी जी ने उसे कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं है कि हिन्दुओं को मुसलमानों से निसर्गजात द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार ही है।

(पृष्ठ 217)

सन 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

(पृष्ठ 277, 268)

सन 1877 में सहारनपुर में पर्दा प्रथा पर बोलते हुए महर्षि दयानन्द ने कहा – स्त्रियों को पर्दे में रखना अनुचित है, यह नहीं है कि बिना पर्दे के स्त्रियाँ सदाचारिणी नहीं रह सकतीं, पर्दे में भी पाप होते हैं। बिना विद्या-प्राप्ति के सदाचारी नहीं हो सकता। पर्दा मुसलमान राजाओं के समय में प्रचलित हुआ, क्योंकि वे जिस किसी की बहू-बेटी को रूपवती देखते थे उसे छीनकर बलात् लौंडी बना लेते थे। इस अत्याचार के कारण हिन्दुओं ने

अपनी बहू-बेटियों को पर्दे में रखना आरम्भ कर दिया। अंग्रेजों की स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं और हिन्दुओं की स्त्रियों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमती, विदुषी, साहसी और उच्चाशयवाली होती हैं। (पृष्ठ 351)

सन 1878 में अजमेर में स्वामी जी के व्याख्यानों में सहस्त्रों मनुष्य आते थे। अजमेर के कमिशनर, डिप्टी कमिशनर, यूरोपीयन पादरी, प्रतिष्ठित मुसलमान प्रभृति भी आते थे। गवर्नमेण्ट कालेज के प्रिंसिपल ने छात्रों को व्याख्यान सुनने जाने के लिए अनुमति दे दी थी। (पृष्ठ 451)

सन 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि 'आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें।' उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सायंकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि "मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो। परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा (अंग्रेजी) राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ।" (पृष्ठ 509)

सन 1881 में रायपुर में स्वामी जी ने ठाकुर हरिसिंह से पूछा कि आपके यहाँ राज-मन्त्री कौन हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि शेख इलाही बख्श हैं, परन्तु वे जोधपुर गये हैं, उनके पीछे उनके भतीजे करीम बख्श (जो वहाँ उपस्थित थे) सब काम देखते हैं। यह सुनकर महाराज ने कहा कि आर्यपुरुषों को उचित है कि यवनों को अपना राज्यमन्त्री न बनाएँ ये तो दासीपुत्र हैं। इसे सुनकर करीम बख्श और अन्य 4-5 मुसलमान, जो वहाँ बैठे थे, क्रोध में भर गये। थोड़ी देर पश्चात् सब चले गये। (पृष्ठ 558)

भ्रान्ति निवारण – लेखक महर्षि दयानन्द

भ्रान्ति निवारण पुस्तक की भूमिका में स्वामी जी लिखते हैं – दूसरा कारण आर्यों के बिगाड़ का यह भी है कि उनको जैन लोगों ने बहुत कुछ दबाया और सत्यग्रन्थों का नाश किया। फिर इन्हीं के समान मुसलमानों ने भी अपने धर्म का पक्ष करके दुःख दिया। और जब से अंग्रेजों ने इस देश में राज किया तो इन्होंने यह बात बहुत अच्छी की कि सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार करके प्रजा को समान दृष्टि से सुधारा।

सत्यार्थप्रकाश – समुल्लास ग्यारह

महर्षि दयानन्द ने अपने महान ग्रंथ 'सत्यार्थप्रकाश' में योरोपियनों की उन्नति के कारणों के बारे में लिखा है – "बाल्यावस्था में विवाह न करना, लड़का लड़की को विद्या-सुशिक्षा करना कराना, स्वयंवर विवाह होना, बुरे-बुरे आदमियों का उपदेश नहीं होना। वे विद्वान होकर जिस किसी के पाखण्ड में नहीं फँसते, जो कुछ करते हैं वह सब परस्पर विचार और सभा से निश्चित करके करते हैं। अपनी स्वजाति की उन्नति के लिए तन, मन, धन व्यय करते हैं। आलस्य को छोड़ उद्योग किया करते हैं। और जो जिस काम पर रहता है उसको यथोचित करता है। आज्ञानुवर्ती बराबर रहते हैं। अपने देशवालों को व्यापार आदि में सहाय देते हैं। इत्यादि गुणों और अच्छे-अच्छे कर्मों से उनकी उन्नति है।"

सम्पादकिय

नागरिकता संशोधन कानून क्यों धार्मिक भेद भाव से दूर है व संवैधिक मान्यताओं के अनुकूल है?

देश में इस विषय पर मुसलमानों द्वारा काफी विरोद्ध देखने को मिला। यह आवश्यक हो गया कि इसका निष्पक्ष विश्लेषण किया जाये।

मेरे अनुसार नागरिकता संशोधन कानून धार्मिक भेद भाव से दूर है व संवैधिक मान्यताओं के अनुकूल है। कारण निम्न हैं,

- 1 भारत में रहते हुये हिन्दुओं को भी वैसे ही नागरिकता सिद्ध करनी है जैसे दूसरे धर्म वालों को। जो कागज व दस्तावेज हिन्दुओं को दिखाने हैं वही दूसरे धर्म वालों को भी जिसमें मुसलमान भी आते है। ऐसे में भेद भाव कैसे हो गया। यह तो तब कहा जा सकता था यदि हिन्दुओं को कागज न दिखाने होते या मुसलमानों से कम दस्तावेजा दिखाने होते।
- 2 जो धार्मिक भेदभाव कानून में सामने नजर आता है वह भारतीय मुसलमानों के लिये नहीं बल्कि पाकिस्तान, बंगलादेश व अफगानिस्तान से आने वाले मुसलमानों के लिये है जो कि बशरतिया उन देशों में धार्मिक तौर पर पीड़ित किये जायें। सामान्य ज्ञान यही कहता है कि क्योंकि उन तीनों देश में राज्य धर्म इसलाम है इसलिये वहां का कोई भी मुसलमान धार्मिक तौर पर पीड़ित नहीं हो सकता। यह उत्पीड़न तो उन देशों में काफिरों के लिये ही है, इसलिये यदि यह नागरिकता की सुविधा उन काफिर कहे जाने वालों के लिये बनाई गई है तो भेदभाव कहां हुआ। एक प्रश्न जो स्वभाविक तौर पर सामने आता है कि हमारे देश के मुसलमानों और कांग्रेस पार्टी को पाकिस्तान के मुसलमानों से इतनी हमदर्दी क्यों जिसके लिये वह अपने देश में ही आग लगाने के लिये भी तैयार है। यदि कोई कांग्रेसी इसका जवाब दे सके तो मैं खुश हूंगा। वैसे मेरे एक मित्र ने इस का जवाब दिया है वह कहते है कि यह हिन्दुस्तान में नई बात नहीं, जब देश आजाद हुआ तो महात्मा गांधी को भी भारत के हिन्दुओं से अधिक पाकिस्तान के मुसलमानों का ख्याल था व हमदर्दी थी।
- 3 हमारा संविधान धार्मिक भेदभाव से उपर नहीं है। उदाहरण के लिये धारा 30 अल्प वर्ग को विशेष अधिकार देती है। आत जक मुसलमान इस धारा को खत्म करने के लिये उच्च न्यायालय में क्यों नहीं गये।
- 4 मेरा मानना है कि हमारे देश के मुसलमान अपने अधिकारों के लिये तो सड़क पर आयें तो ठीक लगता है पर बाहर के मुसलमानों के लिये यह हिंसा फ़ैलाना, देश की सम्पत्ती को नष्ट करना और कानूनी व्यवस्था को त्रस्त करना ठीक नहीं। ऐसा करने पर उनको यदि कोई गदार कहे तो बचाव करना मुश्किल हो जाता है।



मरहम

एक बुढ़िया थी जो बेहद कमजोर और बीमार थी। रहती भी अकेली ही थी। उसके कंधों में दर्द रहता था लेकिन वह इतनी कमजोर थी कि खुद अपने हाथों से दवा लगाने में भी असमर्थ थी। कंधों पर दवा लगवाने के लिए कभी किसी से मिन्नतें करती तो कभी किसी से। एक दिन बुढ़िया ने पास से गुजरनेवाले एक युवक से कहा कि बेटा ज़रा मेरे कंधों पर ये दवा मल दे। भगवान तेरा भला करेगा। युवक ने कहा कि अम्मा मेरे हाथों की उँगलियों में तो खुद दर्द रहता है। मैं कैसे तेरे कंधों की मालिश करूँ?



बुढ़िया ने कहा कि बेटा दवा मलने की ज़रूरत नहीं। बस इस डिबिया में से थोड़ी सी मरहम अपनी उँगलियों से निकालकर मेरे कंधों पर फैला दे। युवक ने अनिच्छा से डिबिया में से थोड़ी सी मरहम लेकर उँगलियों से बुढ़िया के दोनों कंधों पर लगा दी। दवा लगते ही बुढ़िया की बेचैनी कम होने लगी और वो इसके लिए उस युवक को आशीर्वाद देने लगी। बेटा, भगवान तेरी उँगलियों को भी जल्दी ठीक कर दे। बुढ़िया के आशीर्वाद पर युवक अविश्वास से हँस दिया लेकिन साथ ही उसने महसूस किया कि उसकी उँगलियों का दर्द भी गायब सा होता जा रहा है।

वास्तव में बुढ़िया को मरहम लगाने के दौरान युवक की उँगलियों पर भी कुछ मरहम लग गई थी। यह उस मरहम का ही कमाल था जिससे युवक की उँगलियों का दर्द गायब सा होता जा रहा था। अब तो युवक सुबह, दोपहर और शाम तीनों वक़्त बूढ़ी अम्मा के कंधों पर मरहम लगाता और उसकी सेवा करता। कुछ ही दिनों में बुढ़िया पूरी तरह से ठीक हो गई और साथ ही युवक के दोनो हाथों की उँगलियाँ भी दर्दमुक्त होकर ठीक से काम करने लगीं। तभी तो कहा गया है कि जो दूसरों के ज़ख्मों पर मरहम लगाता है उसके खुद के ज़ख्मों को भरने में देर नहीं लगती। दूसरों की मदद करके हम अपने लिए रोग-मुक्ति, अच्छा स्वास्थ्य और दीर्घायु ही सुनिश्चित करते हैं।

पुस्तक

(English Book of short stories--Our Musings)

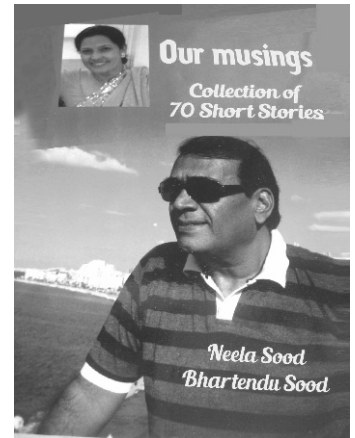
सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी 70 छोटी कहानियों, जो कि अंग्रेजी समाचार पत्रों में समय समय पर प्रकाशित हुई हैं, का संग्रह एक पुस्तक में प्रकाशित किया है, जिसका नाम Our Musings है। इस पुस्तक की कीमत 150 रुपये है। जो भी इस पुस्तक को खरीदने का इच्छुक हो वह 100 रु भेजकर या हमारे बैंक ऐकाउंट में जमा करवा कर मंगवा सकता है। बैंक ऐकाउंट वही है जो कि वैदिक थोटस पत्रिका में दिये हैं। भेजने का खर्चा हमारा होगा।

कृपया निम्न बातों का ख्याल रखें,

पुस्तक इंगलिश भाषा में है।

पुस्तक केवल धार्मिक न हो कर जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूती है

नीला सूद, भारतेन्दु सूद 9217970381



अभी या फिर कभी नहीं

सीताराम गुप्ता



एक बार एक व्यक्ति ने घोर तपस्या करके भगवान को प्रसन्न कर लिया। भगवान ने उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर उसे वर दिया कि जीवन में एक बार सच्चे मन से जो चाहोगे वही हो जाएगा। उस व्यक्ति के जीवन में अनेक अवसर आए जब वो इस वरदान का इस्तेमाल कर अपने जीवन को सुखी बना सकता था लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। कई बार भूखों मरने की नौबत आई लेकिन वह टस से मस नहीं हुआ। अनेक ऐसे अवसर भी आए जब वह इस वरदान का प्रयोग कर देश की काया पलट कर सकता था अथवा समाज को खुशहाल बना सकता था लेकिन उसने ऐसा भी नहीं किया क्योंकि वह तो मन में और ही कुछ ठाने बैठा था।

वह उस अवसर की तलाश में था जब मौत आएगी और वह अपने वरदान का इस्तेमाल कर अमर हो जाएगा और दुनिया को बता देगा कि प्राप्त वरदान का उसने कितनी बुद्धिमत्ता से इस्तेमाल किया है। लेकिन मौत तो किसी को सोचने का अवसर देती नहीं। मौत ने चुपके से एक दिन उसे आ दबोचा। उस का वरदान धरा का धरा रह गया।



आज हम में से अनेक लोगों के पास अवसरों की कमी नहीं है। जो सक्षम और समर्थ हैं उनके तो कहने ही क्या हैं? किसी के पास धन-दौलत के भंडार हैं तो किसी के पास सत्ता की ताकत है। किसी के पास ज्ञान का आगार है तो कोई बाहुबल में बहुत आगे है। कोई अपने जीवन में कठोर संयम का पालन करने वाला है तो कोई अत्यंत संवेदनशील और दयालु है। ये सब कोई मामूली चीजें अथवा स्थितियाँ नहीं हैं अपितु अत्यंत महत्वपूर्ण स्थितियाँ हैं। ये स्थितियाँ वरदान से किसी भी तरह कम नहीं हैं।

पैसे को ही लीजिये। पैसे से क्या नहीं हो सकता? कहीं पैसों के अंबार लगे हैं लेकिन पैसों के अभाव में कोई भूखों मरने को विवश है तो कोई बिना दवा के बीमारी में दम तोड़ने को अभिशप्त है। न जाने कितने लोगों की भुजाओं में अपरिमित बल है लेकिन इसके बावजूद अनेकानेक लोग अरक्षित और शोषित हैं। ऐसे बाहुबल का क्या प्रयोजन जो कमजोर की रक्षा न कर सके? कई लोगों के हाथों में ऐसी शिफा होती है कि जिसको छू दिया वही भला-चंगा हो गया। कई दूसरे वैद्य-हकीम अथवा डॉक्टर कमाल के उपचारक होते हैं लेकिन यदि वे अपने हुनर का सही इस्तेमाल ही नहीं करेंगे तो उस हुनर का क्या फायदा?

इसके बाद बारी आती है सत्ता की ताकत की। सत्ता की ताकत क्या नहीं कर सकती? सत्ता की ताकत से विरोधियों को कुचला जा सकता है। सत्ता की ताकत से सत्ताधीशों की शान में किसीदे लिखवाए जा सकते हैं। सत्ता की ताकत से अर्थोपार्जन संभव है। लेकिन इसी सत्ता की ताकत से देश को खुशहाल बनाया जा सकता है। इसी सत्ता की ताकत से कंकाल रूपी असंख्य नागरिकों को मानव के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। इसी सत्ता की ताकत से शोषितों को, मज़लूमों को शोषण से मुक्त किया जा सकता है। सामर्थ्यवान ही कमज़ोर को भयमुक्त करने में सहायक हो सकता है।

इस सब के बावजूद वे इन नेमतों का सदुपयोग नहीं करना चाहते। मौत से पहले जी लेने का अर्थ है अपनी सामर्थ्य अथवा इन नेमतों का सदुपयोग कर लेना। और यह बेहद ज़रूरी है और अभी करना ज़रूरी है क्योंकि बाद में तो कोई अवसर मिलने से रहा। ये दौलत, ये बाहुबल, ये सत्ता की ताकत कुछ भी साथ नहीं जाने वाला है। जिन के लिए ये सब कर रहे हो उन के भी काम नहीं आने वाला है। सुना नहीं क्या मुगलों के अनेक वंशज आज जगह-जगह मज़दूरी करके किसी तरह अपना पेट भर रहे हैं? क्या उनके पूर्वजों ने कम दौलत संग्रह की थी? न उनके साथ गई और न उनके वंशजों के काम ही आई। उनके साथ गई तो केवल नेक कामों की कीर्ति। ये नेक कामों की कीर्ति मौत से पहले जी लेने की प्रक्रिया का ही पर्याय है।

इस देश को आज़ाद करवाने के लिए लाखों लोगों ने अपने प्राणों की ही आहुति दे डाली। आज भी सत्ता के उच्च शीर्ष पर बैठे कुछ सत्ताधीशों के पास अवश्य ही देश के लोगों के दुख-दर्द बाँटने का जज़्बा होगा। फिर देर किस बात की है? अब चूक हो गई तो फिर दोबारा ये मौका हाथ में आने का नहीं। कोई स्थिति कितनी ही महत्वपूर्ण क्यों न हो उससे समय पर लाभ उठा लेना ही बुद्धिमानी है। कोई कितनी ही कीमती चीज़ क्यों न हो उसका समय पर इस्तेमाल कर लेना ही समझदारी है नहीं तो बाद में पछताने के सिवाय कुछ हाथ नहीं आता। वर्तमान समय और वर्तमान उपलब्ध अवसर का समय पर उपयोग दोनों का ही भरपूर इस्तेमाल करना बुद्धिमान व्यक्ति का लक्षण है।

उर्दू के मशहूर शायर 'शुजाअ' खावर का एक शेर है:

'शुजाअ' मौत से पहले ज़रूर जी लेना,

ये काम भूल न जाना बड़ा ज़रूरी है।

vxj vki dks dN dguk gS ; k i f=dk **subscribe** djuh gS

dI; k fuEu address ij I Ei d dj

Hkkj rInq I n] 231 I DVj & 45-, p.MhxM+160047

0172-2662870] 9217970381] E mail : bhartsood@yahoo.co.in

TYPES OF MIND

Dr S.P. Puri



According to Vedanta philosophy, mind has the dual capacity of being objective and subjective. The mind facing various objects is the outer objective mind. It faces the world of external stimuli from sensory organs. The inner mind is subjective mind called intellect, which is the discriminating faculty. It reacts to the stimuli received from the sensory organs. Wisdom based on our intellect pacifies and controls our egoism and agitation in our lives.

Conscious Mind—This is the mind that we have in our work-a-day living. In our waking state, external stimuli constantly keep our working mind engaged and the subjective mind sits back and retains all the processed information. It dies at the time of death.

Subconscious Mind— This is a store house of our thoughts through all our earlier lives and is very powerful as it provides instantaneous input to the mind. When in deep sleep or during hypnosis, our mind makes us insensitive to the external world and our subconscious mind becomes active automatically and deals with our thought processes, memory and motivation. It determines our character. It goes with us, with our astral body when we die.

People usually think we have conscious and subconscious mind that are apart from each other. The truth is, it is all consciousness. It is all one mind.

The objective mind is the conscious mind and the subjective mind is the subconscious mind.

Super Conscious Mind or universal mind—Yogis reach the stage of super consciousness through the practice of meditation. The super conscious mind does not get tired and yogis don't need any sleep for relaxation as they get pure rest from meditation. It encompasses a level of awareness that sees both material reality and the energy and consciousness behind that reality. The super conscious state is where ideas for truly great works of art, music, prose, poetry, great scientific discoveries, and deep spiritual experiences are found.

Paramhansa Yogananda in his book: Autobiography of Yogi, made an interesting statement that, "Thoughts are universally, not individually, rooted."

Cosmic mind (Hiranyagarbha) is the sum of all the minds. The individual mind relates to the cosmic mind. Cosmic mind, Hiranyagarbha, super conscious mind, infinite mind, and universal mind are synonymous terms.

Hiranyagarbha is cosmic Prana also. It is the substratum. It represents the electric, cosmic powerhouse. The different Jivas represent the different small bulbs. Electricity from the powerhouse flows through insulated copper wires into the bulbs. Similarly, the power from Hiranyagarbha flows into the Jivas.



आपके कर्म कैसे अपना काम करते है।

यदि कोई व्यक्ति ऐसी बिमारी का शिकार है कि वह अपनी यादाशत भूल चुका है, अपने माता पिता पत्नी बच्चो, किसी को भी नहीं पहचानता नहीं है, इसका अर्थ यह नहीं कि वह आपके परिवार का सदस्य नहीं रहा, वह सदैव आपके परिवार का सदस्य रहेगा यहां तक कि आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये भी सदस्य रहेगा। इसी तरह आपके किये हुये कर्म भी आप के साथ जाते है, नष्ट नहीं होते। यह उसी तरह है जैसे बैंक में जमा करवाया पैसा, आप जमा करवा कर भूल भी जायें पर पैसा वहीं रहेगा।

इसी तरह जब हमारा नया जन्म होता है तो हमे हमारे पिछला जीवन याद नहीं होता परन्तु हमारे कर्म हमारे साथ ही आ गये होते हैं। जैसे कम्प्यूटर के डेटा बैंक में सब चीजें स्टोर रहती है वैसे ही हमारे डेटा बैंक में हमारे पिछले कर्म स्टोर होते हैं। फर्क यह है कि कम्प्यूटर के डेटा बैंक की क्षमता तो सीमित होती है और वायरस आने पर नष्ट भी हो सकती है परन्तु हमारे चित में जो डेटा बैंक है उसकी क्षमता असीमित होती है और किसी भी तरह का वायरस उसे खत्म नहीं करता।

कर्म भोग का नियम यह कहता है जो आपके डेटा बैंक में अच्छे कर्म स्टोर होते है, उनके फल स्वरूप हम सुख प्राप्त करते हैं। इसी तरह जो आपके डेटा बैंक में बुरे कर्म स्टोर होते है, उनके फल स्वरूप हम दुख प्राप्त करते हैं। बहुतों का मानना है कि ईश्वर की इस में कोई दखलदाजी नहीं परन्तु प्रश्न यह है कि ईश्वर को फिर न्यायकारी क्यों कहा गया है। न्यायकारी इस लिये कहा गया है क्योंकि यह कर्मफल की व्यवस्था उसी के बनाये मैनुयल जो चार वेदों के रूप में उस का हिस्सा है। वेद स्पष्ट कहते हैं कि कर्म भोग कर ही खत्म होते हैं व अच्छे कर्म का अच्छा फल है और बुरे कर्म का बुरा। बुरे कर्मों को खत्म करने का और कोई रास्ता नहीं। यह समझना है कि हमारे बुरे कर्म गंगा में डुबकी लगा कर या फिर किसी बाबा सन्त की शरण में जा कर खत्म हो जाते है, अज्ञान है। बुरे कर्म कभी भी मान्यता प्राप्त किसी पवित्र स्थान पर जाने से पर खत्म नहीं होते जैसे कि हम में अधिक लोग मानते है। दूसरा ईश्वर के बनाये सभी स्थान पवित्र हैं पवित्र का लेवल तो इंसान ने अपने कियी फायदे के लिये लगाया होता है। मेरा कहना इस लिये वाजिव है क्योंकि जितने अधिक पवित्र स्थान बनते जा रहें हैं उतनी ही घृणा व तनाव बढ़ता जा रहा है। महान व्यक्तिया की बातों को मान लिया जीवन में अपना लिया यही बहुत है उनके जन्म या मृत्यु स्थान पर जाने से कुछ नहीं बनता। हां घूमने फिरने जाना हो अवश्य जायें।

कर्म भोग का एक नियम यह भी है कि कर्म, भोग कर ही खत्म होते हैं। बुरे कर्मों को खत्म करने का और कोई रास्ता नहीं। यह समझना है कि हमारे बुरे कर्म गंगा में डुबकी लगा कर या फिर किसी बाबा सन्त की शरण में जा कर खत्म हो जाते है, अज्ञान है।

धर्म

वस्तुतः धर्म कोई बाहरी चिह्न व आडंबर का नाम नहीं है बल्कि उन शाश्वत गुणों का नाम है जिनको जीवन में धारण करने से मनुष्य स्वयं तो सुखी बनकर उन्नति व समृद्धि की ओर अग्रसर होता ही है साथ ही अन्य प्राणियों को भी सुखी बनाता है। जैसे सत्य बोलना, सद्व्यवहार करना, किसी से द्वेष, ईर्ष्या व घृणा न करना, परोपकार करना आदि। यह सभी गुण पूर्ण रूप से वैदिक धर्म में मिलते हैं, जिसमें सत्य प्रतिष्ठित है। इसीलिए वह—‘सत्यं शिवं सुंदरं’ को चारितार्थ कर लोकधर्म बन गया।

महात्मा गांधी द्वारा कहीं बातें

पाशवी वृत्तियों को जलाना सच्चा यज्ञ है

कोई बात प्राचीन है, इसलिये अच्छी है और उसे मानते रहें कोई अच्छी सोच नहीं। पाप पूरण कृत कितने भी पुराने क्यों न हों चाहे सदियों से निर्विरोध चल रहें हों उनको त्यागना ही होगा। उदाहरण के लिये शराबखोरी और जुआ चाहे कितने भी समय से चल रहें हैं उनको त्यागने में ही भला है। कोई भी व्यक्ति यह कह कर कि ये तो प्राचीन समय से चल रहा है उन को करता है तो पाप है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन बातों को हमारा विवके ठीक न समझे उस को त्यागने में तत्पर रहें। यही बात स्त्रियों द्वारा पर्दा प्रथा पर भी आती है। इस में कोई अच्छी बात नजर नहीं आती इसलिये इसे त्यागना ही ठीक है।



यही बात यज्ञ की है पशुहिंसा के साथ यज्ञ करना यज्ञ नहीं परन्तु पाशवी वृत्तियों को जलाना सच्चा यज्ञ है। हिन्दु जाति का सुधार तभी सम्भव है जब जड़ता को छोड़ कर प्राचीन कुप्रथाओं पर प्रहार करें।

यदि श्रद्धा बुद्धि से परे है तो वह अधीन श्रद्धा है। अधीन श्रद्धा को आप श्रद्धा नहीं कह सकते। ऐसी श्रद्धा बुराईयों की जड़ है। उदाहरण के लिये कोई व्यक्ति यह कहे कि मैं आकाश में जो पुष्प होते हैं, उनकी पूजा करता हूं तो यह अंधी श्रद्धा के सिवा कुछ नहीं।

आखिर कुछ बात तो थी

आखिर कोई बात तो थी कि महात्मा गांधी को भारत से बाहर भी लोग इतना सम्मान देते हैं।

घर बसाने के साथ मैंने खर्च घटाना शुरू कर दिया

भोग विलास मैंने शुरू तो किया पर वह टिक न सका। घर के लिये साज समान भी बनाया पर मेरे मन में उसके प्रति मोह उत्पन्न नहीं हो सका। इस लिये घर बसाने के साथ ही मैंने खर्च कम करना शुरू कर दिया। धोबी का खर्च भी ज्यादा मालुम हुआ। इसलिये मैंने धुलाई का सामान जुटाया। धोना सीखा। पत्नी को भी सिखाया। काम का कुछ बोझ तो बड़ा ही, पर नया काम होने के कारण उस में आनन्द आने लगा। जिस तरह धोबी की गुलामी से छूटा, उसी तरह नाई की गुलामी से भी छूटने का अवसर आ गया। मैंने बाल काटने की मशीन खरीदी और खुद बाल काटने का अभ्यास शुरू कर दिया और कुछ समय बाद ही मैं अभ्यस्त हो गया।

What is enlightenment?

Enlightenment is attainment of true Knowledge. Knowledge is removal of ignorance. Ignorance can be removed by self-learning, by being aware all the time, by using the intellect to the core, by seeking, by query, by being guided and finally by the blessings of the one who is already enlightened (in other words, the guru).

This is a slow process when one moves from one level of consciousness to another. A small aperture through which light of knowledge enters expands suddenly and becomes a door through which it is possible to witness a person becoming wiser, perhaps a superhuman, offering a view of him never seen before. This is the elusive Self, one sought out and which suddenly becomes live, ready to talk to self. It takes one through depths of wisdom, love, compassion and benevolence. It reveals secrets of the universe and humanity, and truths of life and right way to live it and in the end embrace the death as happily as he enjoyed any other event of his life. The negatives in one die and positives start growing. The mind is without any jealousy, crookedness, over ambition, hatredness, arrogance, greed, attachment, lust and such other negativity of mind which one experiences in this mundane world. One's perception of family and country changes completely. He comes out of the narrow considerations of origin, language, race, caste, gender, religion and so many others which act as a wall between one man and the other. For him world is one family and entire humanity forms its members in the spirit of vasudheva katumbakam. He comes to know that life lived with others is life.



When one gets enlightened, it conveys that the seed of knowledge has been sown in him; the idea of knowledge has taken shape in womb of his mind. Now this seed has to grow in to a tree which is capable of giving shade and fruit to everybody.” This is the real purpose of enlightenment.

A lit candle lights another candle. Similarly, only an enlightened person can enlighten another person. There is no other way. Fired by curiosity to know the truth, enlightenment is exponential and involves experimenting. There is no text book for it. Without an urge to know the truth, even Vedas can't give you enlightenment. There are many who have read Vedas many a times but are devoid of true enlightenment. They are good so far so to give discourses only. The real fruit of enlightenment is the removal of ignorance and fear, which is a great gift. Enlightened person has no fear. He had learnt to embrace death

happily. He will speak only truth and nothing except truth. At the spiritual level also, the more we shed our ignorance about who we are and our constitutional position in this universe, the closer we come to God, who is full and eternal enlightenment.

Last, enlightenment has no meaning if it is not used to enlighten other people. Then it is like an oak tree which is huge but neither gives shade nor bears fruit. Light of knowledge has to be dispersed. It is incumbent upon the enlightened being to guide others selflessly. Whether Socrates, Buddha, Guru Nanak Dev or Maharishi Dayanand, they were the true embodiment of enlightened souls and used their knowledge so obtained from enlightenment to remove the ignorance of others. Guru Nanak Dev when met Sidhas, he said, "Your being enlightened is all waste if you do not use it to enlighten others" This is why, in one of the principles of Arya Samaj, Maharishi Dayanand said----"Remove ignorance (avidya) and promote knowledge (Vidya) by enlightening others. This is true enlightenment.

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

विश्वाम अनाहुतिम

इसका अर्थ है कि हमारी भावना अयज्ञीय न हो अर्थात् हम कृतघ्न न बनें खास कर उस परमेश्वर के प्रति जो हमें प्राण देता है, जीवन के सब साधन देकर पालता है और रक्षा करता है। उसका स्मरण करना न भूलें क्योंकि जो भी इस सृष्टि में दिखाई दे रहा है वह उसी की देने है। इसी तरह हम अपने देवों के प्रति भी कृतज्ञ रहें। कोन है वे देव ? दन देवों में सब से उपर माता पिता का स्थान है। क्या उस मां के उपकार को भूलाया जा सकता है, जिसने हमें 9 माह तक अपनी कोख में रखा और जन्म देते ही भरपूर प्यार दूला दिया, अपने सुख का त्याग देकर हमें पाला।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

आपके द्वारा दी गई दक्षिणा से पड़ित ने मोहाली में डिस्को बार बनाया



कांगड़ा के बगलामुखी मंदिर के मंहत रजत गिरी हवन यज्ञ तो करवाते हैं पर साथ ही मोहाली में पिरामिड नाम का डिस्को बार भी चलाते हैं। मोहाली के ईलावा पिरामिड डिस्को बार की अमृतसर, अंबाला, यमुनानगर, करनाल पानीपत में भी शाखायें हैं। उनका कहना है कि यह सब पैसा मैंने पूजा, पाठ, हवन आदि करवा कर कमाया है और मैं मंदिर का पैसा प्रयोग नहीं करता। इसके अलावा एक शोक उनको मंहगी गाड़ियों का भी है। एक ही बात समझ आती है—जैसे हम हैं वैसे ही हमारे गुरु बन गये हैं।

Is reservation not a fundamental right? Supreme court decision on promotion: things you need to know

A Supreme Court decision has questioned the basic provision of reservation in government jobs. The court said reservation is not a fundamental right, and if the government has not given reservation in jobs and promotions, it cannot be forced to provide reservation. The case was related to a decision taken by the Uttarakhand government in 2012. On September 5, 2012, the then Uttarakhand government had decided that all posts in public services in the state would be filled up without giving any reservation to SC and ST candidates. When the verdict was later challenged in the Uttarakhand High Court, the High Court quashed the verdict in April 2019.

Later, the High Court reviewed its own judgment and directed the state government to collect data on the inadequacy of representation of SC and ST officers in various services of the State Government. The High Court had said that based on these figures, the state government will be able to decide whether to provide a reservation or not. The High Court judgment was challenged in the Supreme Court, and the Supreme Court's verdict came the same in this case. The court said, the government can take a decision on whether to provide reservation in recruitment in public services, and it cannot be forced to provide reservation. The decision has raised questions over the basic constitutional provision of reservation.

The answer to this question is quite tricky. The reservation is discussed under Articles 15(4), (5), and 16 (4) of the third part of the Indian Constitution. But since the whole part 3 relates is related to fundamental rights, so it is assumed that reservation is a fundamental right. On this, Faizan Mustafa, vice-chancellor of the National Academy of Legal Studies and Research (NALSAR), says that if you make a narrow interpretation of the Constitution, you will find that reservation is not clearly written anywhere as a fundamental right. Mustafa adds, "But if you make a liberal interpretation of the Constitution, you will understand that the provision of the reservation lies in the right to equality. Moreover, reservation is not an exception for equality but an extension of equality."

On Monday, February 10, the Supreme Court's decision was debated in Parliament in which opposition parties objected to the decision and held the central government responsible for it. The Congress alleged that the entire BJP-RSS mindset is to abolish the reservation. The RJD has urged the government if the NDA government at the Center did not take any steps against the Supreme Court order. The central government is currently taking precautions on the issue. In a statement in the Lok Sabha on the matter, Social Justice Minister Thaawarchand Gehlot only said that the Government of India will take appropriate steps. This is not the first time in the last six years that the original existence of reservations has been debated. Even before that, the government and opposition parties have come face to face on reservations, either by any move by the government or because of a Supreme Court justice. Further, it has to be seen whether the Central Government files a petition against the Supreme Court order.

क्या है वे अध्यात्मवाद की बातें जो हमें इस लोभ व मोह की प्रवृत्ति से बचा लें

- 1 इस संसार की कोई भी वस्तु केवल हमारे लिये नहीं है बल्कि सब के लिये है। महात्मा गान्धी के शब्दों में, ज़रूरत से अधिक जो भी सम्पदा हमारे पास है, उसका भगवान ने हमें केवल रक्षक बनाया है न की मालिक।
- 2 किसी भी दुनिया की चीज पर प्रयोजन रहित कब्जा बनाकर रखने से अच्छा है उस का आवश्यकता पूर्ती के लिये प्रयोग हो।
- 3 भौतिकवाद में खुशी ढूँडना मृगतृष्णा की तरह है।
- 4 हमारे अच्छे कर्म ही हमें खुशी प्रदान कर सकते हैं।
- 5 धन एक नौकर के रूप में तो ठीक है पर जब हम इसे मालिक का रूप दे देते हैं तो बात बिगड़ जाती है।

TIME TO LAUGH

A married couple in late fifties were dining in a restaurant on their marriage anniversary when a beautiful fairy appeared and said----“ For being such a exemplary loving couple I want to grant each you a wish.”

“Oh, I want to travel around the world with my loving husband” said the excited wife.

Fairy waved the magic band and two tickets with total stay package were on their table

Now it was man's turn, he thought for a moment, “It is a golden opportunity, I shouldn't miss a chance” he thought and said to the fairy, “I want that I move with a wife who is 30 years yonger to me.”

His wife and fairy were disappointed but then wish was to be granted.

Soon the man was 88 years old

Moral of the story-----Men are generally ungrateful and selfish.

Banta: If a tiger attacks your mother-in-law and your wife at the same time, whom would you save?

Santa: Of course, the tiger.

Banta: Why?

Santa: Very few are left. And also, I can always get another wife with a ready-made mother-in-law.

रजि. नं. : 4262/12

॥ ओ३म् ॥

फोन : 94170-44481, 95010-84671



महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगढ़ - 160059
 शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
 आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला

E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

MRS. SUDESH SETH SERVING LANGAR TO NGO CHILDREN



धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह

धार्मिक सखा 500 प्रति माह

धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह

धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह

धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह

धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते हैं :-

A/c No. : 32434144307

Bank : SBI

IFSC Code : SBIN0001828

All donations to this organization are exempted under section 80G



स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

fuek.kl ds 63 o"kl



स्वर्गीय
डॉ० भूपेन्द्र नाथ गुप्त
सूद

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradun-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwalayar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jalandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45-ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

ftu egkuqkkoks us cky vkJe ds fy, nku fn; k



Mr Baldev Vig



Mr Shanti Prakash Khanna



Mr Dharamvir Kanotra



Anil Keshyp



Surinder Mohan Sood



मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

**40 years
in service**



DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर-वधु की तलाश,
प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये
शुभ-अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते हैं।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870